वह दीप्ति को अपने बारे में समझाता है कि वह बहुत साफ दिल का व्यक्ति है किन्तु उसकी पत्नी एक बहुत कमीनी स्त्री है। वह उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करती है। बात-बात में उसे गालियां देती है और लड़ती-झगड़ती है किन्तु दीप्ति को कुछ समझ में नहीं आता और वह रोने लगती है। घर पहुँचाने की जिद्द करती है। मनफूल उसे घर पहुंचा आता है हालांकि मनफूल भी काफी डर गया था उसे लगा कि मामला कहीं बिगड़ न जाए।

था। दूसरे दिन ही वह दीप्ति से स्कूल के बाहर मिला और उसे तबला बजाने सीखने लिए प्रेरित करने लगा। इस पर दीप्ति हंस पड़ी उसे लगा कि औरतें कहां तबला बजाती हैं किन्तु मनफूल उसे समझाता है कि जमाना बहुत बदल गया है। अब ऐसा कौन-सा काम है जो स्त्री नहीं करती है। उसे वह रोज कसरत करने की भी सलाह देता है। मनफूल दीप्ति से कहता है कि यदि उसके बताए गए रास्ते पर चली तो वह दुनियाभर में नाम कमा सकती है। मनफूल का मानना था कि अगर तन्दुरुस्ती अच्छी है तो वह प्रत्येक काम में सफलता प्राप्त सकती है यहां तक अपने क्लास में टॉप भी कर सकती है। वह अपनी बातों से दीप्ति को पूरी तरह प्रभावित करने की कोशिश में लगा हुआ था। हालांकि मनफूल पढ़ाई-लिखाई से कोसों दूर था किन्तु उपदेश देने में माहिर था। इसी उपदेश के सहारे दीप्ति पर प्रभाव जमाने की फिराक में था। लड़कियां फांसने में मनफूल कच्चा खिलाड़ी है किन्तु उसे पूरा यकीन था कि उसके सुन्दर स्वस्थ शरीर पर लड़कियां जरूर आकर्षित हो जाएंगी।

अब दीप्ति अपने पिता से कहती है वह तबला सीखेगी इस पर उसके पिता उसको समझाते हैं किन्तु वह अपनी जिद पर अड़ी रहती है और अन्ततः अपने पिता को राजी कर लेती है। हालांकि इस निर्णय से उसकी मां बसन्ती बहुत क्षुब्ध होती है। उसे लगा है दीप्ति को इतना सर चढ़ा लिया गया कि सारा घर चौपट हो जाएगा। वह अधिक दुःखी होती और रोने लगती है। किन्तु दीप्ति को बहुत प्रसन्नता होती है। दीप्ति के तबला सीखने के कारण ही मुन्नीलाल और बसन्ती में काफी कहा-सुनी होती है। यहां तक कि मुन्नीलाल बसंती को मारने लिए उठते हैं। किन्तु शंकर के बीच बचाव के कारण स्थिति सामान्य हो गई थी। किन्तु दीप्ति पर इसका असर बुरा पड़ा था। उसने अपनी मां से बातचीत तक करना बंद दिया। जैसे-जैसे वक्त गुजरा वैसे-वैसे दीप्ति के मन में मनफूल का प्रभाव बढ़ता गया। मनफूल भी संगीत विद्यालय में अपना नाम लिखवा लेता है और दीप्ति को रोज छोड़ने ले जाता है। मनफूल तुच्छता और धूर्तता के किसी भी स्तर को छू सकता था किन्तु इस वक्त वह कोई मौका गंवाना नहीं चाहता था। किसी तरह अपनी पत्नी को भी समझा-बुझा लेता है कि वह तबला सीख गया तो उसकी वकालत चल निकलेगी। मनफूल के अनुसार इस बार जो मजिस्ट्रेट आए हैं वह भी गाने-बजाने के शौकीन हैं। और उसे बहुत पसंद भी करते हैं तथा घंटों उससे बातें भी करते हैं। इससे उसके साथी उससे जलते हैं। अपनी पत्नी के प्रति उसका ख्याल भी कुछ इस तरह था- ''अगर इस चुड़ैल को मालूम हो जाएगा तो यह छाती पर बैठकर उसका खून पी जाएगी। ऐसी जालिम औरत है यह।'' वह किसी तरह अपनी पत्नी को समझा-बुझाकर संगीत विद्यालय में अपना नाम लिखवा लेता है। एक दिन अंधेरे का लाभ उठाकर वह दीप्ति को आलिंगनबद्ध करने की चेष्टा करता है। ऐसी घटना दीप्ति के जीवन पहली बार घटी थी। किन्तु वह इसका कोई प्रतिवाद नहीं कर पाती है और उत्तेजना और डर के मारे हांफने लगती है। वह दीप्ति को अपने बारे में समझाता है कि वह बहुत साफ दिल का व्यक्ति है किन्तु उसकी पत्नी एक बहुत कमीनी स्त्री है। वह उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करती है। बात-बात में उसे गालियां देती है और लड़ती-झगड़ती है किन्तु दीप्ति को कुछ समझ में नहीं आता और वह रोने लगती है। घर पहुँचाने की जिद करती है। मनफूल उसे घर पहुंचा आता है हालांकि मनफूल भी काफी डर गया था उसे लगा कि मामला कहीं बिगड़ न जाए। वह दीप्ति को समझाने की कोशिश करता है अगर वह उससे नाराज हुई तो वह आत्महत्या कर लेगा और वह दीप्ति का पैर स्पर्श कर लेता है। वह अपनी पत्नी का पैर पकड़कर कई बार माफी भी माँग चुका है। दीप्ति बहुत डर गई थी किन्तु उसकी इस चतुराई से दीप्ति के मन में बहुत करुणा और दया आ गयी थी। उसे लगा कि कहीं मनफूल आत्महत्या न कर ले। दीप्ति ने यह तय किया कि वह मनफूल को समझाएगी और उसे ऐसा करने से रोकेगी। अब मनफूल रोज दीप्ति को घर से ले जाता और घर छोड़ आता। किन्तु कुछ ही समय बाद दीप्ति की सहेली कुन्ती मनफूल की पत्नी को सारी रामकहानी सुना देती है। और उसकी पत्नी मनफूल को रंगेहाथ पकड़ लेती है। दीप्ति को मारती-पिटती है। इस मारने-पीटने से दीप्ति बेहोश होकर गिर जाती है। मनफूल की पत्नी उस पर बिल्कुल भरोसा नहीं